उत्तर (Set-2)

खंड–क

1. (क) लेखक मन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मन बड़ा चंचल होता है, उस पर नियंत्रण करना बड़ा कठिन होता है। किसी घटना या प्रसंग से ध्यान हटाने पर भी मन बार-बार उसी का चिंतन करता है। मन की गति बड़ी तीव्र और इसकी शक्ति अपार होती है।

   (ख) दृढ़ संकल्प करने से मन पर नियंत्रण किया जा सकता है। दृढ़ संकल्प से असाध्य लक्ष्य भी साध्य हो जाता है। इससे मन के हारने या जीतने की भावना, सुखी या दुखी होने की भावना पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

   (ग) आचार्य विनोबा भावे ने मन के विषय में कहा है कि जब तक मन को नियंत्रित नहीं किया जाता, तब तक राग-द्वेष (प्रेम-घृणा) आदि भाव शांत नहीं होते हैं। मनुष्य अपनी इंद्रियों का गुलाम बनकर स्वेच्छाचारी बन जाता है।

   (घ) दृढ़संकल्प शक्ति से बलपूर्वक मन पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

   (ङ) उपसर्ग – मूलशब्द – प्रत्यय
   सर्व – शक्ति – मान

2. (क) कवि ने पथिक को लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा दी है। उन्होंने पथिक की तुलना लक्ष्य-भेदने वाले बाण और धरती की कालिमा दूर करने वाले ज्योति पुंज से की है।

   (ख) कवि उन्हें पथिक नहीं कहना चाहते हैं जो लक्ष्य तक पहुँचे बिना ही विश्राम लेना चाहते हैं या लक्ष्य पथ पर हार मानकर बैठ जाते हैं या ठहर जाते हैं। ऐसे ठहराव और विश्राम की प्रवृत्ति वाले लोग कभी जीवन लक्ष्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो पाते। इसीलिए ये पथिक नहीं कहे जा सकते।

   (ग) बाल रवि की किरणें पल भर में धरती पर पहुँचकर अंधकार का नाश करती हैं।

   (घ) कवि लक्ष्य-पथ के काँटों को भी फूल के समान ही मानते हैं।

   (ङ) धनुष से छूटा हुआ बाण, मार्ग में कहीं भी ठहरे बिना ही लक्ष्य का भेदन करता है।

खंड–ख

3. (क) मिश्र वाक्य

   (ख) मूर्तिकार ने सुनते ही जवाब दिया।

   (ग) जो बच्चे शोर मचा रहे थे, उन्हें पकड़ लिया गया।

4. (क) राम द्वारा स्वादिष्ट भोजन किया जाएगा।

   (ख) उन लोगों से शांत नहीं रहा जाता।

   (ग) बच्चे फूलदान में फूल लगाएँगे।

   (घ) कर्तृवाच्य

5. (क) **हिमालय** – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

   (ख) **वह** – अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

   (ग) **सूरदास** – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

   (घ) **दूध** – जातिवाचक (द्रव्यवाचक) संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्म।

6. (क) वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है।

   (ख) हास्य रस, स्थायी भाव–हास

   (ग) करुण रस के अनुभाव हैं–रोना-बिलखना, विलाप करना, भाग्य को कोसना आदि।

(घ) अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु।
चकित भई गद्‌गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु ॥

खंड–ग

7. (क) नमक-मिर्च छिड़की हुई ताज़े खीरे की पनियाती फाँकों को देखकर लेखक का जी ललचाने लगा। खीरा खाना चाहते हुए भी पहले मना कर देने के कारण वे चुपचाप मन मारे बैठे रहे और नवाब साहब की गतिविधियों को देखते रहे।

(ख) लेखक ने खीरा न खाने की वजह बताते हुए नवाब साहब से कहा कि उस समय उन्हें खीरा खाने की इच्छा नहीं हो रही है। उनका अमाशय भी कमज़ोर है। इसलिए वे खीरा खाना नहीं चाहते हैं।

(ग) नवाब साहब ने तृष्णा भरी आँखों से खीरे की फाँकों की ओर देखा। एक-एक फाँक उठाकर अपने होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें बंद हो गईं, मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने खीरे की फाँकों को क्रमशः एक-एक करके ट्रेन की खिड़की से बाहर फेंक दिया।

8. (क) फ़ादर बुल्के ने संन्यास लेते समय धर्मगुरु के सामने यह शर्त रखी थी कि वे भारत जाना चाहते हैं। कदाचित् इसका कारण उनके मन में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव था।
वे भारत आकर भारतीय आदर्शों तथा संस्कृति से जुड़ना चाहते थे। वे हिंदी भाषा से बहुत प्रेम करते थे। अतः हिंदी की समृद्धि के उद्‌देश्य से वे भारत आना चाहते थे।

(ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ऐसा इसलिए कहा कि क्योंकि उस समय प्राकृत जन साधारण की भाषा थी। भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत में ही धर्मोपदेश देते थे। संस्कृत न बोलने वाले लोग प्राकृत भाषा का प्रयोग लिखने और बोलने के लिए करते थे। बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ, गाथा सप्तशती, कुमारपाल चरित, सेतुबंध महाकाव्य आदि की रचना प्राकृत में ही हुई है। अतः यह अनपढ़ों की नहीं, अपितु सुशिक्षितों की बोलचाल की भाषा थी।

(ग) प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ की तुलना हिरन से इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार हिरन अपने भीतर स्थित कस्तूरी की महक से अनभिज्ञ रहता है और उस सुगंधि को वन-वन में खोजता फिरता है, उसी प्रकार शहनाई के सातों सुरों की सही परख रखने वाले बिस्मिल्ला खाँ भी यही सोचते थे कि उन्हें सातों सुरों को बरतने की तमीज़ सलीके से नहीं आई। इस प्रकार हिरन की भाँति अपने आंतरिक गुण से अनभिज्ञ सुर सम्राट बिस्मिल्ला खाँ भी घंटों रियाज़ करते थे।

(घ) लेखिका मन्नू भंडारी के अपने पिता के साथ संबंध मधुर नहीं थे। उन दोनों में वैचारिक मतभेद रहता था। उनके पिता शक्की स्वभाव के थे, जिसे लेखिका पसंद नहीं करती थीं और कभी-कभी भन्ना जाती थीं। होश सँभालने के बाद किसी-न-किसी बात पर पिता से टक्कर चलती रहती थी।

9. (क) संगतकार, तानों के जंगल में भटके हुए गायक के गाने के स्थायी को पकड़े रहता है। वह प्राचीन काल से ही मुख्य गायक के स्वर में अपनी गूँज मिलाता आ रहा है।

(ख) मुख्य गायक को संगतकार सँभालता है। मुख्य गायक जब संगीत के जटिल सुरों में खो जाता है या अपनी ही सरगम को लाँघकर अनहद में भटक जाता है, तब संगतकार अपनी हल्की मधुर आवाज़ देकर मुख्य गायक के भटके हुए स्वर को सँभाल लेता है। इस प्रकार मुख्य गायक का साथ निभाते हुए, उसके गायन की कमियों को छिपाकर गायन की प्रस्तुति को सफल बनाने में योगदान देता है।

(ग) संगतकार द्वारा गायक का साथ देना देखकर लगता है जैसे वह मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान समेट रहा हो। उसके स्वर जब मुख्य गायक के गीत को सँभाले रहते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वह उसे उसका बचपन याद दिला रहा हो, जब वह बालक था और संगीत सीख रहा था।

10. (क) कन्यादान कविता में माँ को इस बात का दुख था कि वह जिस बालिका का कन्यादान कर रही थी, वह अभी अबोध थी। वह अत्यंत भोली-भाली और जीवन के यथार्थ-ज्ञान से पूर्णतः अपरिचित थी। वह माता-पिता के बहुत स्नेह-प्रेम में पली-बढ़ी थी। माँ, बेटी के रूप में अपनी पूँजी को दूसरों के हाथ में सौंपते हुए दुखी हो रही थी।

(ख) 'छाया मत छूना' कविता के कवि गिरिजा कुमार माथुर हैं। कवि ने 'छाया' जीवन के उन सुखद क्षणों को कहा है, जो बीत चुके हैं। जिस प्रकार छाया को पकड़ना संभव नहीं होता है, उसी प्रकार जीवन के बीते हुए सुखद क्षणों को पुनः पाना संभव नहीं होता है।

(ग) 'उत्साह' कविता में बादलों के बरसने से संपूर्ण सृटि उत्साहित एवं आनंदित हो जाती है। कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करते हैं–

(*i*) बादल प्यासे-पीड़ित जन की इच्छा को पूरा करने की ओर संकेत करते हैं।

(*ii*) बादल मनुष्य को संघर्ष के लिए प्रेरित कर जीवन में परिवर्तन और नयापन लाने की ओर संकेत करते हैं।

(*iii*) 'उत्साह' कविता में बादल जीवन में क्रांति लाने की ओर संकेत करते हैं।

(घ) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' कविता में लक्ष्मण की उपमा लौहमयी खाँड़ से दी गई है। लौहमयी खाँड़ का अर्थ लोह से बनी मज़बूत तलवार से है। वे रघुकुल के परमवीर, साहसी, तेजस्वी राजकुमार थे। राम-लक्ष्मण के युद्ध कौशल और वीरता से अपरिचित परशुराम जी उन्हें पहचान नहीं पाए। उनके क्रोध और अहंकार को देख मुनि विश्वामित्र ने लक्ष्मण को मन-ही-मन अयमय खाँड़ (लौहमयी तलवार) कहा।

11. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ के माध्यम से लेखक ने सत्ता से जुड़े सभी लोगों की मानसिकता और देश की बदहाल स्थिति पर करारा व्यंग्य किया है। अंग्रेज़ी हुकूमत से आज़ादी प्राप्त करने के बाद भी सत्ता से जुड़े लोग भारतीय नेताओं की नाक काटने को तैयार हो जाते हैं। सत्ता से जुड़े ऐसे लोग औपनिवेशिक दौर की मानसिकता के शिकार हैं। जॉर्ज पंचम की नाक अर्थात मान सम्मान एक साधारण भारतीय की नाक से भी छोटी है। सत्ता से जुड़े लोग केवल इंग्लैंड की महारानी को खुश करने के लिए अपनों की इज्जत के साथ खिलवाड़ करने पर उतारू हो जाते हैं। जॉर्ज पंचम की लाट की सुरक्षा के लिए हथियार बंद पहरेदार तैनात किए जाते हैं। लाट की किस्म का पत्थर न मिलने पर ज़िंदा व्यक्ति की नाक काटकर लगा देने की इजाज़त मूर्तिकार को मिल जाती है, परंतु इस बात को अखबार वालों से गुप्त रखा जाता है। यह पूरी गतिविधि भारतीय जनता के आत्मसम्मान पर प्रहार करती है और सत्ताधारियों के भ्रष्ट आचरण को उजागर करती है।

अपने राष्ट्र को भ्रष्टाचार से मुक्त बनाने के लिए हमें दिखावे की प्रवृत्ति को छोड़कर ईमानदारी और निःस्वार्थ भाव से अनुशासित जीवन जीते हुए राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। जनता की सेवा, राष्ट्र नेताओं का सम्मान, समाज कल्याण करते हुए देश के शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध को समृद्ध बनाना होगा। व्यक्तिगत आचरण की शुद्धता और पारदर्शिता पर विशेष बल देना होगा।

अथवा

लेखक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने हिरोशिमा पर लिखी स्व-रचित कविता का उदाहरण देते हुए यह स्पष्ट किया है कि एक जले हुए पत्थर पर लंबी उजली मानव छाया को देखकर उनका अंतर्मन दर्द की अनुभूति से दहल उठा और इसी भीतरी विवशता ने उन्हें लिखने के लिए बाध्य किया। वस्तुतः अनुभूति, कल्पना और संवेदना के सहारे लेखक की अंतरात्मा में उतर कर उसकी चेतना को कुछ लिखने के लिए विवश कर देती है। इसी आंतरिक बेचैनी से मुक्ति पाने के लिए लेखक लिखते हैं।

एक दिन अचानक सड़क पर घूमते हुए लेखक ने एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली मानव छाया को देखा। उन्होंने कल्पना की कि विस्फोट के दौरान कोई वहाँ पर खड़ा रहा होगा और विस्फोटक किरणों ने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। उस छाया को देखकर उन्हें एक थप्पड़-सा लगा। इसके पूर्व उन्होंने हिरोशिमा के अस्पताल में रेडियम पदार्थ से आहत, वर्षों से कष्ट पा रहे लोगों को देखा था, परंतु लेखक के लिए यह अनुभूति इतनी प्रबल थी कि उन्हें लगा कि वे पल भर में हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गए हैं।

यदि लेखक के स्थान पर मैं वहाँ होता तो कदाचित मेरी भी स्थिति कुछ ऐसी ही होती। बम-विस्फोट से रेडियम-धर्मी पदार्थ की किरणों ने पत्थर को झुलसाकर सामने खड़े व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा, यह दर्दनाक अनुभूति मेरे अंतर्मन को भी निःसंदेह कुछ लिखने के लिए विवश कर देती।

खंड–घ

12. (क) **भ्रष्टाचारः एक विकराल दानव**

भ्रष्टाचार का अर्थ है भ्रष्ट आचरण। रिश्वतखोरी, कालाबाज़ारी, जमाखोरी और मिलावट जैसी सामाजिक कुरीतियाँ भ्रष्टाचार के अंतर्गत आती हैं। इससे भारत जैसे विकासशील देश की प्रगति द्रुतगति से नहीं हो पा रही है। सरकार पंचवर्षीय योजनाओं के द्‌वारा देश के आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और कृषि संबंधी विकास के लिए जो धनराशि प्रदान करती है, वह जनसाधारण तक न पहुँच कर कुछ खास लोगों के हाथ लग जाती है। वे इसका प्रयोग लोककल्याण के लिए नहीं करते, अपितु व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाने में करते हैं। यही भ्रष्टाचार का दानवी रूप है।

आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार के दानव ने कमज़ोर, अशिक्षित, साधनहीन लोगों के जीवन को दूभर बना दिया है। भ्रष्ट आचरण के वशीभूत होकर कुछ लोग देश के प्रति अपने कर्तव्य को भूलकर पैसा बटोरने की होड़ में लगे हुए हैं। समाचार पत्रों में भी नेताओं के काले कारनामे और अवैध संपत्ति के विषय में लेख छपते हैं। आचरणभ्रष्ट मनुष्य आज गरीबों, अशिक्षितों का खून चूस रहे हैं। वे व्यक्तिगत स्वार्थ को ही महत्त्व देते हैं। आज बुद्‌धिमानी, ईमानदारी, कर्मठता, जनकल्याण करने की प्रवृत्ति आदि को परे रखकर केवल धनवान को ही समाज में इज़्ज़त दी जाती है।

भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण रोज़गार के स्वस्थ साधनों का अभाव, शिक्षा की कमी, जनसंख्या-वृद्‌धि, भौतिक साधनों के प्रति लगाव आदि हैं। साधन सीमित हों और उपभोक्ता ज़्यादा हों तो महँगाई एवं भ्रष्टाचार बढ़ता है। दुकानदार कालाबाज़ारी और जमाखोरी में जुटे रहते हैं। अधिकांश लोग झूठी मान-मर्यादा फ़ैशन-परस्ती के चपेट में आकर अपने आदर्श, ईमानदारी और विवेक की बलि चढ़ाकर गलत रास्ते से धन इकट्‌ठा करने में जुटे हुए हैं।

आजकल भ्रष्ट आचरण पर रोक लगाने के लिए सरकार ने केंद्रीय उपभोक्ता विभाग की स्थापना की है। नोटबंदी ने इसकी जड़ें हिला दी हैं। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए आम नागरिक को सरकार का सहयोग करना चाहिए। हमें व्यापक जनांदोलन खड़ा करके भ्रष्टाचार के दानव को दूर भगाना होगा।

(ख) **स्वस्थ-समृद्‌ध राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान**

किसी भी राष्ट्र के निर्माण, उसकी प्रगति में नारी का योगदान बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। माता जीजाबाई ने शिवाजी के व्यक्तित्व को सँवार, उन्हें देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। चंद्रशेखर आज़ाद हों या रामप्रसाद बिस्मिल, मोहनदास करमचंद गांधी हों या जवाहरलाल नेहरू सभी के व्यक्तित्व की महानता के पीछे उनकी माँ की शिक्षा ही दिखाई देती है। स्त्री अर्थात राष्ट्र की आधी आबादी यदि निष्क्रिय होगी, तो भला राष्ट्र का सक्रिय विकास कैसे संभव होगा? अतः नारी शक्ति की सक्रियता, जागरूकता किसी भी समृद्‌ध राष्ट्र की सुदृढ़ नींव कही जा सकती है।

आधुनिक समाज में नारी का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह आधुनिक फ़ैशन-परस्त होकर भी अपने संतान के प्रति ममता भाव से पूर्ण, घर-गृहस्थी के संचालन में पटु और रोज़गार के क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चलने वाली स्त्री है। भारत जैसे विकासशील देश में भी नारियों ने विशेष प्रगति की है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री के पद पर आसीन होकर नारी ने अपनी शक्ति का परिचय दिया है।

आज स्त्रियों ने सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों को पार कर चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सिविल सेवा, बैंक, पुलिस, फ़ौज, वैज्ञानिक व्यवसाय, वायुयान चालक आदि के रूप में अपनी बहुमुखी योग्यता प्रदर्शित की है। सानिया, साइना, मैरी कॉम आदि ने खेलों में अपनी धाक जमाई तो बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर तिरंगा फहराया। कल्पना-चावला ने अंतरिक्ष का भ्रमण किया तो मलाला युसुफ़ज़ई, किरन बेदी, मेनका गांधी, सुषमा स्वराज आदि ने शिक्षा, प्रशासन, पशु-सुरक्षा, राजनीति में अपनी धाक जमाई।

इतना होते हुए भी आज सरकार और देश की जागरूक संस्थाओं को स्त्री-शिक्षा में सुधार लाने और ग्रामीण क्षेत्रों में उसके प्रसार की ओर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे अज्ञानता, निराशा और मजबूरी का नामोनिशान मिट जाए।

स्त्रियों का पुरुषों पर आर्थिक रूप से निर्भर होने की प्रथा को मिटाने के लिए आवश्यक है कि स्त्री-शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क बनाया जाए। कानूनी नियमों के साथ लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना भी ज़रूरी है। स्त्रियों की बुद्धि, शक्ति और क्षमता का उपयोग करने के लिए उन्हें समानता के अधिकार केवल संवैधानिक तौर पर ही नहीं, अपितु सामाजिक तौर पर भी दिए जाने चाहिए।

(ग) **बाल-श्रमिक**

धनोपार्जन के लिए मज़दूरी करने वाले बच्चे ही बाल-श्रमिक कहलाते हैं। एक बच्चे का परिवार का बोझ उठाने के लिए होटलों में दिन-रात बर्तन माँजना, ग्राहकों की सेवा करना, अँगीठी सुलगाना, मोटर गाड़ियों की सफ़ाई करना, सब्ज़ी वाले का ठेला सजाना, माता-पिता के साथ ईंट ढोना, छोटी बच्चियों से घरों में साफ़-सफ़ाई का काम लेना आदि बाल मज़दूरी के कई ऐसे मार्मिक कृत्य हैं, जो बरबस ही बच्चों का बचपन उनसे छीन लेते हैं।

ये छोटे बच्चे मालिक की झिड़कियों के साथ उठकर बेमन से बिना कुछ खाए-पिए काम पर लग जाते हैं। देर रात तक उनसे काम लिया जाता है। मजदूरी के बदले पैसे भी बहुत कम दिए जाते हैं। बस्ता उठाकर हँसते हुए स्कूल जाने का सुख उनके लिए सपना ही रह जाता है।

व्यवसायी, गृहस्वामी, दुकानदार, उद्योगपति आदि सभी इन बाल-श्रमिकों का शोषण करते हैं। बाल मज़दूर आसानी से इनके दबाव में आ जाते हैं।

सरकार ने बाल-मज़दूरी को अपराध घोषित कर दिया है। बच्चों से काम लेने वालों के लिए दंड का विधान भी है, परंतु आज भी जहाँ-तहाँ काम करते हुए बच्चे दिखाई देते हैं। सरकारी अफ़सरों को चाय पिलाने वाले भी बाल-मज़दूर ही होते हैं।

भारत सरकार ने संपूर्ण देश में आरंभिक शिक्षा को पूरी तरह मुफ़्त कर दिया है, परंतु गरीबी के कारण बाल मज़दूरों के माता-पिता ही उनसे मज़दूरी करवाना चाहते हैं। उनकी इस मानसिकता को पूरी तरह से बदलना होगा। बच्चों के बचपन को लौटाने के लिए, राष्ट्र की नींव को मज़बूत बनाने के लिए, समग्र राष्ट्र के विकास के लिए बाल-मज़दूरी को समाप्त करना होगा जिससे कोई बच्चा बाल-श्रमिक न कहलाए।

13. प्रेषक

क०ख०ग०

2xx सैक्टर 29

गुड़गाँव

दिनांक : 11/11/2017

प्रिय अनुज अखिल,

सस्नेह आशीर्वाद।

आशा है तुम कुशलपूर्वक होंगे तथा माता-पिता, दादा-दादी सभी स्वस्थ एवं कुशल होंगे। मैं यहाँ छात्रावास में सकुशल हूँ, यद्यपि घर की बड़ी याद आती है। मैंने यहाँ की समय-सारिणी के अनुसार ही अपनी दिनचर्या बना ली है। इससे पढ़ने-खेलने के सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं।

छात्रावास की इस समय-प्रबंधन योजना से मुझे बहुत लाभ हुआ है। इसके विषय में मैं तुम्हें भी बताना चाहता हूँ। समय प्रबंधन का अर्थ सभी आवश्यक कार्यों के लिए समय का उचित रीति से आवंटन करना है, जिससे सभी कार्य नियमित एवं सुचारू रूप से हो सकें। प्रातःकाल 6 बजे उठना, नित्यक्रिया, स्नान आदि से निवृत्त होकर थोड़ी देर योग करना, दूध पीना और फिर अंकगणित का

अभ्यास करना। साढ़े सात बजे तैयार होकर नाश्ता करना, विद्यालय जाना, दोपहर में विद्यालय से लौटकर भोजन करके, थोड़ी देर विश्राम करना। फिर गृहकार्य पूरा करना, दो घंटे खेलना फिर अन्य विषयों का अभ्यास करना, समाचार पत्र पढ़ना। फिर भोजन करके थोड़ी देर टीवी देखना। अंत में हिंदी/अंग्रेज़ी की पुस्तक पढ़ते हुए रात 10 बजे सो जाना। यही दिनचर्या चलती है।

प्रिय भाई, इससे मेरा मन संयमित तथा जीवन व्यवस्थित हो गया है। मेरे सभी कार्य समय पर पूरे हो जाते हैं। कक्षा में भी मुझे अच्छे अंक आ रहे हैं और मुझे सम्मान भी मिल रहा है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम भी इसी प्रकार घर में रहते हुए एक नियमित दिनचर्या का पालन करो तो तुम भी कक्षा में अव्वल आओगे। बड़े होकर हम दोनों अपने माता-पिता का नाम रोशन करेंगे। माता-पिता, दादा-दादी को मेरा चरण स्पर्श तथा तुम्हें मेरा प्यार भरा आशीर्वाद। समयानुसार पत्र का उत्तर देना।

तुम्हारा अग्रज

क०ख०ग०

अथवा

प्रेषक

क०ख०ग०

गली नं० 2xx

राजेंद्र नगर

मेरठ

सेवा में

नगर निगम स्वास्थ्य अधिकारी

मेरठ

दिनांक : 11/11/2017

विषय : खाने-पीने के पदार्थों में की जाने वाली मिलावट के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं क०ख०ग० राजेंद्र नगर, गली नं० 2xx का निवासी हूँ। हमारे यहाँ खुले बाज़ार में मिलावटी खाने-पीने की चीज़ें बेची जा रहीं हैं। इसका दुष्प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। मिठाइयों की दुकानों पर मिठाइयाँ स्वादिष्ट तो हैं, परंतु उनमें खोये के स्थान पर किसी अन्य हानिकारक वस्तु का प्रयोग किया जा रहा है। हल्दी, धनिया, मिर्च आदि पिसे हुए मसालों का स्वाद भी पहले जैसा नहीं रहा। दूध में मिलावट तो आम बात है।

आशा है आप मेरे इस शिकायती पत्र पर ध्यान देंगे और इस इलाके की दुकानों में बिकने वाली वस्तुओं की जाँच करवाएँगे। इस महँगाई के ज़माने में ज़्यादा पैसे देकर भी यदि उपयुक्त वस्तु न मिले, तो ग्राहक को बड़ा असंतोष होता है। आशा है आप समुचित कार्यवाही करते हुए लोगों के स्वास्थ्य रक्षा का दायित्व भली प्रकार निभाएँगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

क०ख०ग०

14.

रॉयल टायर कंपनी

रोहतक पंजाब

मीलों चलते, साथ निभाते
खूब घूमकर घर पहुँचाते
टायर है हम रॉयल के

एम०आर०पी० पर
20% की छूट

हमें आज़माएँ,
विश्वास बढ़ाएँ।

विशेषताएँ –
- सस्ते एवं टिकाऊ
- लंबे सफ़र में विश्वसनीय
- ट्यूब वाले और ट्यूबरहित

फ़ोन : 989898XXXX

अथवा

सुप्रसिद्ध गायिका

सुलक्षणा

आपके शहर में ...

दिल्ली की एक शाम,
रंगीन, संगीतमय, नयनाभिराम

समय–
संध्या 6:30 बजे से 11:00 बजे तक

इंद्रप्रस्थ स्टेडियम में
दिनांक 15.01.2018

टिकट मूल्य – ₹ 250/–
₹ 500/–
₹ 1,000/–
₹ 2,000/–

टिकट मिलने का स्थान–सभी मेट्रो स्टेशन तथा इंद्रप्रस्थ स्टेडियम के गेट नं० 1 और 5 पर